बिरसा मुंडा

(जनजातीय गौरव)

संपादक

आलोक कुमार चक्रवाल

बिरसा मुंडा
(जनजातीय गौरव)

संपादक

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

कुलपति, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सह-संपादक

प्रो. शैलेन्द्र कुमार

कुलसचिव, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

संपादक-मंडल

प्रो. प्रवीन कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. घनश्याम दुबे
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. नीलकंठ पाणिग्राही
विभागाध्यक्ष
मानवशास्त्र एवं जनजातीय विकास विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. सुबल दास
सहायक प्राध्यापक
मानवशास्त्र एवं जनजातीय विकास विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

किताबवाले
दिल्ली-110002

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

शीर्षक : बिरसा मुंडा (जनजातीय गौरव)

सम्पादक: प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल, प्रो. शैलेन्द्र कुमार

© सम्पादक एवं प्रकाशक

संस्करण : **2022**

ISBN : 978-93-90702-70-1

प्रकाशक :

किताबवाले

22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक :

इन-हाउस (सैल्फ)
नई दिल्ली-110 002

अनुक्रमणिका

संदेश — सुश्री अनुसुईया उइके (माननीया राज्यपाल, छ.ग.) — *(iii)*

संदेश — धर्मेन्द्र प्रधान (माननीय मंत्री, भारत सरकार) — *(v)*

संपादक की कलम से — *(vii)*

1. **Birsa : Making of The Dharti Aba** — 1
   Sanjay Kumar Sinha
2. **Bhagwan Birsa Munda: A Tribal Hero of Indian Adivasis** — 10
   Kunal Kashyap, Priyanka, Subal Das
3. **The Ulgulan for Jal, Jangal and Jamin** — 14
   Vipin Tirkey
4. **Birsa Munda and his Political Vision** — 18
   Sudarshan Singh
5. **The Legend of The Ulgulan** — 24
   Payal Singh
6. **Fir Se Kareu Ulgulan Re: An Analysis of Nagpuri Song Dedicated to Bhagwan Birsa Munda** — 33
   Sirista Julita Meenz, Balram Oraon
7. **जनजातीय चेतना के महानायक बिरसा मुंडा** — 37
   प्रवीन कुमार मिश्रा
8. **बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन : इतिहास लेखन, प्रकृति और प्रसांगिकता** — 44
   रितेश्वर नाथ तिवारी
9. **आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा : एक अध्ययन** — 52
   शशिकांत पाण्डेय
10. **समकालीन संदर्भ में बिरसा मुंडा के चिन्तन की उपादेयता** — 61
    प्रमोद कुमार, संजय यादव

11. **भारतीय प्रतिरोध का जननायक : अमर शहीद बिरसा मुण्डा** 70
अतुल कुमार मिश्र, सीमा पाण्डेय

12. **आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा तथा उनका धर्म** 78
अनिल कुमार ठाकुर

13. **''बिरसाइत'' धर्म के जीवन संस्कार संबंधित प्रथाएँ: एक मानवैसानिक अध्ययन** 86
शीला पुरती, अबु हुरैरा अंसारी

14. **बिरसा मुंडा एवं राष्ट्रवाद** 90
प्यारेलाल आदिले, मनहरण अनन्त

15. **बिरसा मुण्डा का धार्मिक चिंतन और बिरसा धर्म** 96
घनश्याम दुबे, गुलजार सिंह ठाकुर

16. **समकालीन भारत में बिरसा मुण्डा और उनके जीवन दर्शन की प्रासंगिकता** 101
बिजय प्रकाश शर्मा

17. **औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष** 109
आशीष कुमार सिंह

18. **मुंडा जनजाति में स्वजगारण का द्योतक उलगुलान का स्वरूप** 115
अभिषेक कुमार तिवारी, घनश्याम दुबे

19. **जनजातियों में स्वचेतना का जागरण : बिरसा मुंडा** 122
सीमा पाण्डेय, गोविंद सिंह ठाकुर

20. **बिरसा मुंडा : सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन के क्रांतिदूत** 127
घनश्याम दुबे, सचिन कुमार

21. **औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष** 136
आचार्य प्रदीप शुक्ला, अमर नारायण

22. **बिरसा मुंडा: दीकु, संघर्ष तथा स्वर्ण युग की संकल्पना** 142
प्रदीप शुक्ला, परिवेश कुमार बर्मन

23. **आदिवासियों के उत्थान का मसीहा बिरसा मुंडा** 153
सीमा पाण्डेय, सुभाष कुमार

24. **भारत के प्रतिरोध का इतिहास एवं बिरसा मुंडा** 158
गणेश कोशले

18

मुंडा जनजाति में स्वजगारण का द्योतक उलगुलान का स्वरूप

अभिषेक कुमार तिवारी*, घनश्याम दुबे**

"मैं केवल देह नहीं, मैं जंगल का पुश्तैनी दावेदार हूं,
पुश्ते और उनके दावे मरते नहीं, मैं भी मर नहीं सकता,
मुझे कोई भी जंगलों से बेदखल नहीं कर सकता उलगुलान ! उलगुलान!!"[1]

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध से 19वीं सदी के बीच कई नवीन क्रांतिकारी परिवर्तन हुए, जिसके कारण आधुनिक भारत का एक सशक्त राष्ट्र के रूप में निर्माण संभव हो सका। इन्हीं क्रांतिकारी परिवर्तनों में से एक महान परिवर्तन, मुंडा जनजाति के अंतस्थ: में 'स्व' की चेतना का आत्मबोध होना, जिसके महानायक थे–'भगवान बिरसा मुंडा'। इन्हीं के प्रयासों के कारण मुंडाओं ने दिकुओ और अंग्रेजो के खिलाफ सशक्त राष्ट्रीय प्रतिरोध किया। जहां तक राष्ट्रीयता का प्रश्न है, बिरसा आंदोलन राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के महायज्ञ में एक बहुमूल्य आहुति था। बिरसा मुंडा का आंदोलन 'उलगुलान' इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भी जारी है। उलगुलान आदिवासियों का जल-जंगल-जमीन के लिए लड़ा गया जन आंदोलन है जो आज भी जारी है। महाश्वेता देवी कहती हैं–'जान गया और देख, बिरसा के वंश के आदि पुरुषों ने छोटानागपुर की नींव डाली थी, लेकिन राजा हुए और उससे हमारी धरती पर जंगलों में बाहर से लोगों ने आकर कब्जा जमा लिया सब छीन लिया। दूसरी जात के दूसरे देश के आदमियों ने और हम देखते रह गए, कुछ भी ना कर पाए। क्या इसके लिए हमारे पुरखों ने इतने आंदोलन किए थे।[2]

बुनियादी तौर पर आधुनिक भारत में राजनीतिक स्व-जागरण का विकास ब्रिटिश शासन के प्रत्युत्तर के रूप में आया लेकिन मुंडाओं के आंदोलन का स्वरूप इससे थोड़ा भिन्न है। मुंडाओं के आंदोलन की जड़ में एक ही प्रमुख समस्या, 'भूमि समस्या' के रूप में थी। मुंडाओं द्वारा अपने भूमि पर अधिकार के लिए स्थानीय स्तर पर दिकुओं के खिलाफ आंदोलन प्रारंभ

* शोधार्थी, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
** सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़